डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **श्री. प्रविणकुमार नरसाप्पा चौगुले** द्वारा एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत **'' मंटो की कहानियों का अनुशीलन''** शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 13-12-2006

13.12.06

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

डॉ. के.पी. शहा
शोध - निर्देशक,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री. प्रविणकुमार नरसाप्पा चौगुले** ने मेरे निर्देशन में **''मंटो की कहानियों का अनुशीलन''** शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की **एम्.फिल.(हिंदी)** उपाधि के लिए लिखा है। पूर्वयोजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्र के कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध-निर्देशक

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 13-12-2006

(डॉ. के.पी. शहा)

प्र ख्या प न

''मंटो की कहानियों का अनुशीलन'' शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो **एम्.फिल.(हिंदी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 13-12-2006

(श्री. प्रविणकुमार न. चौगुले)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

सआदत हसन मंटो का व्यक्तित्व बहुमुखी है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध-रेखाचित्र, अनुवाद, व्यक्तिचित्र, रेडिओ-नाटक, व्यंग्य, लेख आदि विविध विधाओं पर लेखनी चलाई है। एम.ए. में मैंने उनकी कुछ कहानियाँ पढ़ी थीं। उन कहानियों के गहरे असर ने मेरे दिलो-दिमाग को प्रभावित किया। जब पता चला कि उन्हें अश्लील लेखक करार दिया गया था तो उनकी कहानियों का समग्र अध्ययन करने की इच्छा से मैं प्रेरित हो गया। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को जानने की भावना मेरे मन में जाग उठी। मेरे जैसा सामान्य छात्र मंटो जैसे महान साहित्यकार की सभी कृतियों पर अपने विचारों को प्रकट नहीं कर सकता। इसीलिए मैंने उनकी प्रतिनिधि कहानियों को जो नरेन्द्र मोहन जी द्वारा संपादित 'मंटो की कहानियाँ' पुस्तक में संग्रहित हैं, लिया है तथा उनका सामान्य परिचय, उनमें चित्रित सामाजिक समस्याएँ, नारी समस्याएँ और विशेषताएँ आदि को लेकर अपने लघु शोध-प्रबंध का विषय बनाया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का अनुसंधान करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न थे -

1. सआदत हसन मंटो का व्यक्तित्व किस प्रकार का था? तथा उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कौन-कौनसी विधाओं पर लेखनी चलाई?
2. मंटो की कहानियाँ किस धरातल पर आधारित हैं?
3. मंटो की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ।
4. मंटो की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ।
5. मंटो की कहानियों की विशेषताएँ।
6. मंटो की कहानियों पर श्लील-अश्लीलता के आरोप।
7. मंटो पर किए गए आरोप-प्रत्यारोप।

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर पाने की कोशिश प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में की है।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विभाजन पाँच अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय - मंटो : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने सर्वप्रथम मंटो का जीवन-परिचय दिया है। इस संदर्भ में खानदानी कश्मिरी पंडित, जन्म, माता-पिता, बचपन एवं परिवार, शिक्षा, कार्य तथा जीवनसंघर्ष, विवाह एवं संतान, अर्थोपार्जन, व्यक्तित्व के पहलू, मृत्यू आदि पर प्रकाश डाला है। साथ ही उनकी साहित्य साधना के दौर का उल्लेख करते हुए उनकी विविधयामी साहित्य रचनाओं पर प्रकाश डाला है। अत: मंटो की समग्र रचनाओं की सूची प्रस्तुत की है।

द्वितीय अध्याय - मंटो की कहानियों का सामान्य परिचय ।

प्रस्तुत अध्याय में मंटो की कहानियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है। इसमें कहानी के बारे में मैंने अपने विचार भी प्रस्तुत किए हैं।

तृतीय अध्याय - मंटो की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ।

उक्त अध्याय के अंतर्गत बँटवारा, उसके परिणाम तथा उसके कारण बनी लोगों की मानसिकता, इन्सान की 'फितरत के खिलाफ' जाने की समस्या, मजहब की दीवार, व्यवस्था के प्रति विद्रोह, वेश्या समस्याएँ, मजबूरी, ऐय्याशी, यौन समस्याएँ, प्रेम के संबंध में बनी मानसिकता, अंधविश्वास तथा धोखाधडी, पति-पत्नी के बीच बाहरी संबंधों के कारण बनी अविश्वास की समस्या, बड़ों के गलत तरीकों से छोटे बच्चों पर होते हुए असर की समस्या, मिलावट की समस्या, इज्जत के लिए बनी लोगों की मानसिकता, खुद को तरक्कीपसंद कहलानेवालों की समस्या, घिनौनी मानसिक विकृति की समस्या, ममता पर होते आघात की समस्या, इन्सानियत के अंत की घृणास्पद समस्या आदि सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय - मंटो की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ।

इस अध्याय के अंतर्गत मजबूरी, प्यार के सही पहचान से अनजान नारी, मजहब की दीवार, व्यवस्था के शोषण से ग्रस्त नारी, रखैल तथा वेश्या नारी की समस्याएँ, शिकार की खोज में लगी नारी की समस्या, यौन-भावना से ग्रस्त नारी, विधवा नारी, अंधविश्वास तथा धोखे की शिकार नारी, माहौल के कारण मानसिक विकृति से ग्रस्त नारी, ममता की

प्यासी नारी, चाहत के अधिन हुई नारी, अत्याचार की शिकार नारी, मनमानी आदतों की हिमायती नारी, दयनिय-बेबस नारी, अफवाहों के कारण घबराहट से त्रस्त नारी आदि नारी समस्याओं का चित्रण किया है।

पंचम अध्याय - मंटो की कहानियों की विशेषताएँ।

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत कहानियों की विशेषताएँ चित्रित की हैं। इसमें विशेषताओं के आधार पर कहानियों का विवेचन किया है। इसमें मनोवैज्ञानिकता, बँटवारे के समय के माहौल का यथार्थ चित्रण, नारी पात्रों का सशक्त चित्रण, व्यवस्था पर करारा व्यंग्य, शोषण की समस्या का चित्रण, व्यक्तिचित्रों के तथा मानवीयता के दर्शन, समाज में निहित अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी का चित्रण, प्रकृतिगत या स्वभावगत आवश्यकताओं का अवलंबन, खत्म होते इन्सानियत का चित्रण, अश्लीलता के आरोप से मुक्त आदि विशेषताओं का प्रकाशन किया है।

उपसंहार -

मंटो की कहानियों का सामान्य परिचय, उनमें चित्रित सामाजिक समस्याएँ, नारी समस्याएँ और विशेषताएँ आदि विषयों पर सोचने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में सार के रूप में रखा गया है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची -

इस लघु शोध-प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ-सूची जोड़ दी है, जो मुझे इस शोध-कार्य के सिलसिले में विशेष सहायक सिद्ध हुई।

ऋणनिर्देश -

किसी कार्य को संपन्न करने के लिए योजना बनानी आवश्यक होती है। प्रस्तुत शोधकार्य को संपन्न करने के लिए मैंने भी योजना बनाई थी। जिसके कार्यान्वयन के समय आई कठिनाईयों को सुलझाने के लिए मुझे कई व्यक्तियों तथा पुस्तकालयों की सहायता लेनी पडी। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध **डॉ. के.पी. शहा** जी के कृपापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। इस कार्य के संबंध में आयी हर कठिनाई में आपने मेरा साथ दिया और आपके अमूल्य मार्गदर्शन में ही मैं अपना शोधकार्य पूरा कर सका, इसके लिए सर्वप्रथम मैं आपका अत्यधिक ऋणी हूँ। आपका स्नेहित और आत्मियतापूर्ण स्वभाव मुझे जीवनभर याद रहेगा, जिसके लिए मैं आजीवन कृतज्ञ रहूँगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी** ने अमूल्य मार्गदर्शन के साथ-साथ समय-समय पर मेरे शोध-प्रबंध की चर्चाएँ करके मुझे प्रोत्साहित किया, अत: उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

आदरणीय **डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी** तथा **नरेन्द्र मोहन जी** से मुझे मेरे शोध-कार्य से संबंधित साहित्य उपलब्ध हुआ और इस कार्य के संबंध में समय-समय पर आपका अनमोल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, अत: आप दोनों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

मेरी शिक्षा-दीक्षा तथा प्रस्तुत शोध-कार्य की पूर्ति के लिए अनंत कष्ट उठानेवाले मेरे आदर्शवादी **माता-पिता श्री. नरसाप्पा व सौ. विमल, दादा-दादी** तथा **चाचा-चाची** आदि के आशिर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देते रहे हैं, जो विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं। अत: आजन्म मैं उनके ऋण में रहूँगा।

मेरे शोध-कार्य को संपन्न बनाने में अनेक मित्रों तथा स्वजनों ने मेरी मदद की है। अत: मैं उन सभी के ऋण में रहना ही पसंद करूँगा।

इस कार्य को संपन्न बनाने के लिए **शिवाजी विश्वविद्यालय** के **बॅ. खर्डेकर पुस्तकालय** का तथा **महावीर महाविद्यालय के पुस्तकालय** का सहयोग प्राप्त हुआ। अत: इन पुस्तकालयों के सभी सेवकों का मैं आभारी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंकन **अक्षर टायपिंग, कोल्हापूर** की **सौ.पल्लवी गिरीधर सावंत** जी ने बड़ी लगन से किया है। अत: मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

इस शोध-कार्य को पूरा करने में जिन ग्रंथों का प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उन ग्रंथों के विद्वान लेखकों का भी मैं ऋणी हूँ। साथ ही जिन पत्र-पत्रिकाओं, कोशों का उपयोग हुआ उनके प्रति भी मैं ऋणी हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में जिनसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस कृतज्ञता ज्ञापन के साथ मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ पाठकों तथा विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 13-12-2006

(श्री. प्रविणकुमार नरसाप्पा चौगुले)

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - मंटो : व्यक्तित्व एवं कृतित्व। 01 - 20

अ - व्यक्तित्व ।

1. खानदानी कश्मिरी पंडित
2. जन्म
3. माता-पिता, बचपन एवं परिवार
4. शिक्षा
5. कार्य तथा जीवनसंघर्ष
6. विवाह एवं संतान
7. अर्थोपार्जन
8. व्यक्तित्व के पहलू
9. मृत्यू

ब - कृतित्व

1. कहानी-लेखन की शुरुआत
2. कहानी-संग्रह
3. नाटक
4. उपन्यास
5. निबंध-रेखाचित्र
6. अनुवाद
7. व्यक्तिचित्र
8. व्यंग्य रचनाएँ
9. लेख
10. हास्य-एकांकी

11. रेडिओ-नाटक

12. संपादन

13. फिल्म कंपनी में योगदान

14. रोज एक कहानी और मंटो

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - मंटो की कहानियों का सामान्य परिचय 21-71

तृतीय अध्याय - मंटो की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ 72 -115

1. बँटवारा : परिणाम : मानसिकता
2. इंसान की 'फितरत के खिलाफ' जाने की समस्या
3. मजहब की दीवार
4. व्यवस्था के प्रति विद्रोह
5. वेश्या समस्याएँ
6. मजबूरी
7. ऐय्याशी
8. यौन समस्या
9. प्रेम के संबंध में बनी मानसिकता
10. अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी
11. पति-पत्नी के बीच बाहरी संबंधों के कारण बनी अविश्वास की समस्या
12. बड़ों के गलत तरीकों से छोटे बच्चों पर होते हुए असर की समस्या
13. मिलावट की समस्या
14. इज्जत के लिए बनी लोगों की मानसिकता
15. खुद को तरक्कीपसंद कहलानेवालों की समस्या
16. घिनौनी मानसिक विकृती की समस्या

17. ममता पर होते आघात की समस्या

18. इन्सानियत के अंत की घृणास्पद समस्या

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - मंटो की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ 116-141

1. मजबूर नारी
2. प्यार के सही पहचान से अनजान नारी
3. मजहब की दीवार
4. व्यवस्था के शोषण से ग्रस्त नारी
5. रखैल तथा वेश्या-नारी की समस्याएँ
6. शिकार की खोज में लगी नारी
7. यौन-भावना से ग्रस्त नारी
8. विधवा नारी
9. अंधविश्वास तथा धोखे की शिकार नारी
10. माहौल के कारण मानसिक विकृति से ग्रस्त नारी
11. ममता की प्यासी नारी
12. चाहत के अधिन हुई नारी
13. अत्याचार की शिकार नारी
14. मनमानी आदतों की हिमायती नारी
15. दयनीय-बेबस नारी
16. अफवाहों के कारण घबराहट से त्रस्त नारी

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - मंटो की कहानियों की विशेषताएँ 142-192

1. मनोवैज्ञानिकता
2. बँटवारे के समय के माहौल का यथार्थ चित्रण
3. नारी पात्रों का सशक्त चित्रण
4. व्यवस्था पर करारा व्यंग्य

5. शोषण की समस्या का चित्रण
6. व्यक्तिचित्रों के तथा मानवीयता के दर्शन
7. समाज में निहित अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी का चित्रण
8. प्रकृतिगत या स्वभावगत आवश्यकताओं का अवलंबन
9. खत्म होते इंसानियत का चित्रण
10. अश्लीलता के आरोप से मुक्त

निष्कर्ष

उपसंहार 193-204

संदर्भ ग्रंथ-सूची 205-208

❑❑❑❑